६५ अनुगमन-१: स्थूल से सूक्ष्म

दिनांक -०१-०३-२०१२

स्थूल संसार का नाम भौतिक, रासायनिक वस्तुओं के साथ है | सूक्ष्म वस्तुओं का नाम मन, वृत्ति, चित्त के अर्थ में है | कारण वस्तु का नाम बुद्धि और आत्मा के अर्थ में है और साथ में सहअस्तित्व के अर्थ में भी है | इस प्रकार स्थूल, सूक्ष्म, कारण वस्तुओं का होना सह-अस्तित्व रुपी कारण के प्रतिपादित होने के अर्थ में होता है, जो सभी वस्तुओं में विद्यमान है अर्थात तीनों प्रकार की वस्तुएं सह-अस्तित्व में विद्यमान हैं | यह सभी भौतिक, रासायनिक, जीवन वस्तुएं सत्ता में भीगे रहने के अर्थ में, ऊर्जा सम्पन्नता और चेतना सम्पन्नता के अर्थ में अध्ययनगम्य हैं जिसमें से चेतना सम्पन्नता की ओर गतिशीलता ही चेतना विकास का तात्पर्य है | चेतना विकास हर मनुष्य का अर्थात हर नर-नारी का वाँछित वस्तु है |

यह सार्वभौमता रूप में सकारात्मक वस्तु है | यही चेतना जड़ संसार में जड़ प्रकृति के रूप में ऊर्जा सम्पन्न रहना मूल क्रिया के रूप में स्पष्ट हो जाता है | मूल क्रिया का मतलब गतिशीलता से है | परमाणु अंशों को भी देखने पर पता चलता है कि गतिशील हैं | गतिशीलता को हर स्थिति में पहचाना जाता है | जीवों में चेतना को जीवों की प्रवृत्ति के रूप में पहचाना जाता है | मानव में चेतना को समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व, नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य के रूप में, स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में पहचाना जाता है | यही मानव प्रवृत्ति का पहचान है अथवा मानव चेतना का पहचान है | मानव का अपने स्वरूप का पहचान मानवत्व अर्थ में ही है | इसी क्रम में मानव जब तक जीव चेतना में जीता है तब तक रहस्यता को आदर्श मानता है तथा चार विषय, पांच संवेदनाओं में लिप्त रहता है |

इसको हर व्यक्ति में पहचाना जा सकता है, अध्ययन किया जा सकता है | इस प्रकार सूक्ष्म से सूक्ष्म का स्वरूप स्पष्ट होता है | शरीर को जीवन मानने से जीव प्रवृत्ति के सदृश जीना होता है जबकि शरीर भौतिक, रासायनिक रूप में रचित रचना है | इसमें क्रियाशील आशा, विचार, इच्छाएं जीवन का काम है | इन्हीं गवाही के आधार पर मानव का गवाही सम्पन्न होता है | आशा, विचार, इच्छा में समाधान, सत्य और न्याय प्रमाणित होना ही मानव चेतना है | मानव चेतना पर्यंत मानव सभी अपराधों को वैध मानता ही है इसी कारणवश मानव का अध्ययन कितना आवश्यक है, निश्चय किया जा सकता है | मानव का अध्ययन ही मानवत्व का आधार है | मानवत्व मानव का स्वत्व है |

मानवत्व प्रमाण के रूप में ही होता है, व्यवहार के रूप में ही होता है | मानवत्व के नजरिये में किये जाने वाले जितने भी कार्य हैं वे सब न्याय संगत होना पाया जाता है | न्याय संगत होना ही जागृति है | यही क्रम से न्याय, धर्म, सत्य के रूप में प्रमाणित होता है | मानव का अध्ययन जब मानवत्व के साथ में किया जाता है तब यह स्पष्ट हो जाता है अर्थात न्याय, धर्म, सत्य के रूप में पहचानना बन जाता है न कि संघर्ष, युद्ध, लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद के अर्थ में | सर्वमानव का अध्ययन, स्वीकृति, सम्भावना तुरंत होना पाया जाता है | इसको भली प्रकार से हम जाँच कर देख चुके हैं | इसे हर व्यक्ति जाँच सकता है | इसके फलस्वरूप परिणाम सबके लिये एक समान मिलने के आधार पर सार्वभौमता स्पष्ट होना बन गया है | सार्वभौमताएं मानव चेतना का पहला उपलब्धि है |

न्याय सार्वभौम है | सर्वप्रथम न्याय में ही जागृत होना होता है | इसी के लिए शिक्षा में न्याय धर्म सत्य सहज अध्ययन है | सार्वभौमताएं परम्परा के रूप में होना ही व्यवस्था है | व्यवस्था ही सार्वभौमता, अखण्डता को प्रमाणित करता है | मानव सदा से न्याय का याचक है अथवा न्याय के प्रति अपेक्षा रखने वाला है | यह सुदूर विगत से झलकता है | न्याय सर्वदेश काल में मानव परम्परा के रूप में अर्थात पीढी से पीढी के रूप में प्रमाणित होने के उपरांत ही धर्म और सत्य परम्परा में प्रमाणित होता है | स्वयं व्यवहार में प्रमाणित कर देखा है | यही स्थूल से सूक्ष्म में अनुगमन है अर्थात मानव चेतना में प्रचलित होने से है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज